वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय

आरा, भोजपुर (बिहार)

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग

की

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

"किरातार्जुनीयम् और नैषधीयचरितम् महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन"

निर्देशक:

शोधार्थी

कमलेश सिंह पटेल

किरातार्जुनीयम् और नैषधीयचरितम् महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

संसार में प्रत्येक मनुष्य सुख समृद्धि चाहता है और उसके लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है। शास्त्रकारों ने योगाभ्यास , तपस्या आदि सुख –प्राप्ति के अनेक साधन बतलायें है । काव्यशास्त्र के आद्य आचार्य भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में नाट्य अथवा काव्य के सम्बन्ध में कहा कि काव्य अथवा नाट्य धर्मार्थियों को धर्म कामार्थियों को कर्म, विद्याभिलाषियों को विद्या, दीन दुःखियों और शोकसंतप्त लोगों को परम शान्ति देने वाला होता है । इसी के आधार पर परवर्ती आचार्यो ने काव्य का प्रयोजन माना है मम्मट ने भी काव्य के प्रयोजन दिया है लेकिन इनके काव्य प्रयोजन में से सद्यः परनिर्वृतये को मुख्य माना और इसी को सभी मानकर परमानन्द की प्राप्ति को मुख्य माना। उसे ब्रह्मानन्दसहोदर कहा जाता है ।

काव्य का अर्थ "कवि का कर्म " है। कवि शब्द और अर्थ का ज्ञान कराये बिना काव्य का अर्थ ज्ञान नहीं करा सकता । अतः काव्य के शरीर का निर्माण शब्द और अर्थ से होता है। ये शब्द और अर्थ एक दूसरे से अभिन्न है।

संस्कृति साहित्य में अनेक आचार्यो ने काव्य की परिभाषा दी है–

शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् – काव्यालंकार

वाक्यं रसात्मकं काव्यम् – साहित्यदर्पण

रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् – रसगंगाधर

संस्कृत साहित्य में वृहत्त्रयी संज्ञक महाकाव्यों को विशेष सम्मान जनक उपाधि से विभूषित किया गया है। जिसमें महाकवि भारवि द्वारा रचित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य (18 सर्ग) महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवधम् महाकाव्य (20 सर्ग) तथा महाकवि श्री हर्ष द्वारा रचित नैषधीयचरितम् महाकाव्य (22 सर्ग) आते है।

कवि परिचय–

संस्कृत साहित्य के जगत में महाकवि भारवि ने विचित्रशैली में (अलंकार शैली) काव्य रचना प्रारम्भ किया। इसशैली का अनुकरण महाकवि माघ एवं महाकवि श्री हर्ष ने किया और इस शैली को बढाने का योगदान दिया। भारवि का जन्मस्थान धारानगरी माना गया है। अवन्तिसुन्दरी कथा के अनुसार इनके पिता का नाम श्रीधर और माता का नाम सुशीला था। भारवि शैव थे। इनके पिता का नाम नारायण स्वामी भी ज्ञात होता है। इनक उपनाम (आतपत्र) भारवि था। इनका जन्म कुशिक गोत्र में हुआ था। भारवि का समय 650 ई0 लगभग माना जाता है।

महाकवि श्री हर्ष के जन्म स्थान के विषय में कुछ अनिश्चितता है। इन्होने अपने ग्रंथ के अन्त में परिचय दिये है, जिसमें इनके माता–पिता और आश्रय दाता का नाम मिलता है। श्रीहर्ष के पिता का नाम श्री हीर और माता का नाम मामल्यदेवी था। श्री हर्ष का समय 12 वीं शताब्दी ई0 था। ये जयचन्द्र के आश्रित कवि थे।

महाकाव्यों की उपजीव्यता एवं कथावस्तु

महाकवि भारवि द्वारा किरातार्जुनीयम् महाकाव्य पर आचार्य विश्वनाथ द्वारा दिये गये महाकाव्य का लक्षण पूर्णतया घटित होता है। किरातार्जुनीयम् महाकाव्य की

कथावस्तु ऐतिहासिक है जो महाभारत के वनपर्व से लिया गया हैं । इसका नायक अर्जुन हैं , जो धीरोदात्त गुणों से युक्त सदवंशीय क्षत्रिय हैं। नैषधीयचरितम् महाकाव्य की कथावस्तु भी ऐतिहासिक है। जो महाभारत के वनपर्व के नलोपाख्यान से लिया गया हैं । इसका नायक राजा नल है। जो धीरोदात्त गुणों से युक्त है।

महाकाव्यों का भाव पक्ष एवं कला पक्ष–

किरातार्जुनीय महाकाव्य में वीर रस को प्रधान रस, और श्रृंगार तथा शान्त रस को सहायक (गौण) रस माना गया है। नैषधीयचरितम् महाकाव्य में श्रृंगार रस को प्रधान रस, और वीर तथा शान्त को सहायक (गौण) रस माना गया है।

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में कुल 18 सर्ग है, सम्पर्णू सगों में श्लोकों की संख्या 1040 / 1030 है। प्रधान शैली पांचाली है। प्रथम सर्ग में वैदर्भी शैली का प्रयोग हुआ है।

नैषधीयचरितम् में 22 सर्ग है सम्पूर्ण सर्ग में श्लोकों की संख्या 2830 है। प्रधान शैली वैदर्भी है।

भारवि का प्रियछन्द वंशस्थ है। ये अपने ग्रंथ किरातार्जुनीयम् में 13 मुख्य छन्दों का प्रयोग किया। सर्गान्त में मालिनी और वसन्ततिलका का प्रयोग मुख्यतः किया।

श्री हर्ष का प्रिय छन्द उपजाति है। कुल 19 छन्दों का प्रयोग अपने ग्रंथ में किया है। प्रियछन्द उपजाति का प्रयोग 7 सर्गो में किया गया। प्रथम सर्ग में वंशस्थ का वर्णन मुख्यतः है। श्री हर्ष को छन्द प्रयोग में विशेष दक्षता प्राप्त थी। नैषधीयचरितम् में अनुष्टुप का भी प्रयोग किया गया।

शोध का उद्देश्य

सम्पूर्ण साहित्य में संस्कृत साहित्य का विशिष्ट स्थान है। जिसमें काव्य के अन्तर्गत किराताजुनीय एवं नैषधीयचरितम् महाकाव्य जनमानस के अधिक निकट है। इसमें मानव जीवन से सम्बन्धित, वेद, ज्योतिष, व्याकरण, दर्शन, आयुर्वेद इत्यादि विषयों के साथ ही समाजशास्त्र का वर्णन मिलता है। किरातार्जुनीयम् के प्रथम तीन सर्ग को पाषाणत्रय के रूप माना जाता हैं, तो सम्पूर्ण नैषधीयचरितम् को विद्वानों की ओषधि कहा जाता है। तू डाल डाल तो मैं पात पात वाली कहावत को चरितार्थ करता है, अर्थात् पूर्ववर्ती एवं परवर्ती कवियों ने जिन विषय को अनदेखा किया था उन सभी विषयों को भारवि और श्रीहर्ष ने प्रकाश डाला है ।

अतः शोधार्थी के मन में इन विषयों को और अधिक गहराई से जानने की जिज्ञासा हुई साथ ही साथ इन दोनों काव्यों में क्या समानता एवं असमानता है इसकी विशेष जिज्ञासा उत्पन्न हुयी। अतः इस जिज्ञासा को शान्त करने के लिए आवश्यक है, कि इन दोनों महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय।

सामान्यतः आज तक इस विषय पर बहुत से शोध कार्य हुये लेकिन आज तक किसी सुधी समीक्षक अथवा शोधार्थी द्वारा इन दोनों महाकाव्यों को स्वतंत्र रूप से शोध का विषय नहीं बनाया गया । अतः शोधार्थी अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए किरातार्जुनीयम् महाकाव्य एवं नैषधीयचरितम् महाकाव्य में तुलनात्मक अध्ययन को अपने शोध विषय बनाया।

अध्याय विभाजन

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में छः अध्याय होंगे जिसमें निम्नलिखित विषयों का विवेचन किया जाएगा ।

प्रथम अध्याय - महाकाव्य का सामान्य परिचय

द्वितीय अध्याय - कवि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(क) - महाकवि भारवि का जीवनवृत्त ।

(ख) - किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का परिचय।

(ग) - महाकवि श्रीहर्ष का जीवनवृत्त ।

(घ) - नैषधीयचरितम् महाकाव्य का परिचय ।

तृतीय अध्याय - महाकाव्यों की उपजीव्य एवं मौलिकता ।

महाकाव्यों की कथावस्तु ।

महाकाव्यों उपजीव्यता ।

महाकाव्यों की प्रमुख सूक्तियाँ।

चतुर्थ अध्याय - काव्य सौन्दर्य

भाषा शैली । रस, छन्द, अलंकार ।

प्रकृति चित्रण

(क)- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में प्रकृति चित्रण ।

(ख) - नैषधीयचरितम् महाकाव्य में प्रकृति चित्रण ।

पञ्चम अध्याय - महाकाव्यों में तुलनात्मक अध्ययन

(क) रस की दृष्टि से (ख) अलंकार की दृष्टि से

षष्ठम अध्याय - महाकाव्यों में तुलनात्मक अध्ययन

(ग) राजनीति की दृष्टि से (घ) दर्शन की दृष्टि से

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1.काव्यादर्श	(दण्डी)	श्री धमेन्द्र कुमार गुप्त
2.काव्यालंकार	(रूद्रट)	वासुदेव प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण
3.साहित्य दर्पण	(विश्वनाथ)	आचार्य विश्वेश्वर टीका
4.काव्यप्रकाश	(आ0 मम्मट)	आचार्य विश्वेश्वर (ज्ञान मण्डल लिमिटेड वाराणसी
5.ध्वन्याकोक	(आनन्दवर्धम)	डॉ कृष्ण कुमार, साहित्य भाण्डारकर मेरठ
6.शिशुपालवधम	(माघ)	पंडित हरिगोविन्दशास्त्री ,चौखम्बा विद्याभवन
7.शिशुपालवधम्	(माघ)	तरणीश झा, राम नारायण लाल अरूण कुमार इलाहाबाद
8.किरातार्जुनीय	(भारवि)	रामसेवक दूबे, प्राच्य विज्ञान एवं मानविकी शोध संस्थान
9.किरातर्जुनीयम्	(भारवि)	राजेन्द्र प्रसाद मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन
10.नैषधीयचरितम्	श्री हर्ष	श्री बद्रीनाथ मालवीय,रामनारायण लाल विजय कुमार इलाहाबाद
11.नैषधीयचरितम्	श्री हर्ष	तरणीश झा
12.रसगंगाधर	पण्डित राज जगन्नाथ	मधुसूदन शास्त्री बनारस

13.साहित्यदर्पण	विश्वनाथ	कमलापति त्रिपाठी ,चौखम्बा विद्याभवन
14.अनुसंधान की विधियाँ	डॉ0 डी.एस.सी.	
15.अनुसंधान की विधियाँ		डॉ0 तनुश्री राय, डॉ0 रमेन्दु राय, प्रवालिका पब्लिकेशन इलाहाबाद
16.संस्कृत साहित्य का इतिहास		डॉ0 बलदेव उपाध्याय
17.संस्कृत साहित्य का इतिहास	आचार्य कपिलदेव द्विवेदी	ज्ञानमण्डल भदोही
18.महाभारत	वेद व्यास	गीता प्रेस गोरखपुर
19.महाभारत	वेद व्यास	बम्बई संस्करण
20.महाभारत	वेद व्यास	मद्रास संस्करण
21.किरातार्जुनीयम्		डॉ0 अनुभा बाजपेयी (व्याख्याकार)
22.बुद्चरितम्	अश्वघोष	सूर नारायण चौधरी पूर्णिया

शोध निर्देशक –

शोधार्थी –

कमलेश सिंह पटेल